Hindi Adam l

प्रभु ईसा मसीहने
अप्ने शिष्योंको सिखाया जो
प्रार्थना
और
उस्का वर्णन।

A COMMENT
ON
THE LORD'S PRAYER.

BY

REV. M. T. ADAM.

CALCUTTA:
PRINTED FOR THE BENARES AND CHUNAR TRACT ASSOCIATION,
At the Baptist Mission Press.
1829.

1,400 *Copies.*] [*Aug.* 1829.

COMMENT ON THE LORD'S PRAYER.

प्रभु ईसा मसीहने अपने शिष्योंको सिखाय जो प्रार्थना,

और उसका वर्णन्।

ईसा मसीहने अपने शिष्योंको सीखनेमें ऐसा उनसे कहा कि " जब तुम प्रार्थना करते हो इसी रीतिसे प्रार्थना करो हे हमारे पिता जो स्वर्गमें है तेरा नाम पवित्र होवे। तेरा राज्य आवे। तेरी इच्छा जैसी स्वर्गमें वैसी पृथिवीमें होवे। हमारे प्रति दिनकी रोटी आज हमको दे और हमारी ऋणोंको क्षमा कर जैसे हमभी अपनी ऋणियोंको क्षमा करते है। और हमें परीक्षामें न डाल परन्तु बुराईसें बचा क्योंकि राज्य और पराक्रम और माहात्म्य सदा तेरे है। आमीन्।"

केवल एक ईश्वर जो परमात्मा है और उसकी बुद्धि और पराक्रम और पवित्रता और न्याय और भलाई और सत्यता अनन्त हैं और उसकी प्रार्थना करनी सब मनुष्योंको उचित है " हम उसीसे जीते और चलते फिरते और रहते है।" और " हरएक अच्छा दान और हरएक सम्पूर्ण पुन्य उसीसे है।" " इसलिये सब

मनुष्योंको उसकी नित्य प्रार्थना करनी और ढील न करनी उचित है।" हमसब ऐसे पापी हैं कि हमें दयाका नित्य प्रयोजन है। हमसबमें इतना तात्पर्य्य है कि हमें नित्य देना चाहिये। और हमसब इतने असमर्थ और ऐसे अभागे और डरके हाथमें हैं कि हमें सहायता और रक्षा पावनेका नित्य प्रयोजन है। तब कैसा ठीक है कि हमसब प्रतिदिन ईश्वरकी प्रार्थना करनेमें रहें।

हमसबको शिक्षाका बड़ा प्रयोजन है जिस्तें हमसब अच्छी रीतिसे प्रार्थना करनी जानें क्योंकि जिस् रीतिसे हमें प्रार्थना करनी उचित है सो हम आपहीसे नहीं जानते हैं इस लिये मुक्तिदाता प्रभु ईसा मसीहने कृपा करके सब मनुष्योंको इन बातोंसे सिखाया है किस् प्रकारसे वे सब परमेश्वरकी प्रार्थना करें। उसने अपने शिष्योंसे कहा कि "जब तुम सब प्रार्थना करते हो इसी रीतिसे प्रार्थना करो।" प्रार्थना करनेकी इस् अच्छी रीतिको समझनेके लिये मन देके पहिले विचारो।

किसकी प्रार्थना करनेको हमें उचित है ईसा मसीह इन बातोंसे "हे हमारे पिता जो स्वर्गमें है" बतलाता है और इन्से यह प्रत्यक्ष है कि केवल ईश्वरकी प्रार्थना करनी उचित है और कि जब हमसब उसकी प्रार्थना करते हैं हमसबको अपने मनमें उसके कारण ठीक विचार

रखना चाहिये। तुम सब जो देवते और मूर्तिकी प्रार्थना करते हो परन्तु यह व्यर्थ और बड़ा पाप है। तुम्हारे सब देवते अपने पापनके कारण परमेश्वरके क्रोधके सदा सर्वदा भोग करते हैं तब वे किस् प्रकारसे तुम्हारी प्रार्थना सुन सकें अथवा तुमको कुछ भलाई दे सकें? तुम्हारी सब मूर्ति क्या तुम्हारी बात सुन सकें? "वे कान रखती हैं सही परन्तु सुनतें नहीं वे मुंह रखते हैं परन्तु बोलते नहीं वे आंखें रखते हैं परन्तु देखते नहीं वे नाकें रखते हैं परन्तु सुंघते नहीं वे हाथ रखते हैं परन्तु पकड़ते नहीं वे पांव रखते हैं परन्तु चलते नहीं तब उनको प्रार्थना करना कैसा बावलापन होगा? वे जो उन्हें बनाते हैं और वे सब जो उनका भरोसा रखते हैं उन्हींके समान अर्थात् सब मूरख हैं।" परन्तु परमेश्वर वुह जीता ईश्वर है स्वर्गमें जो ऊपर है और पृथिवीमें जो नीचे है और उसके बिना कोई नहीं है। वुह सर्वशक्तिमान् और सर्व ज्ञानी है और उसकी भलाई और माहात्म्य अनन्त है और मुक्तिदाताके उसके विषयमें इस् बातको कहा है कि वुह हम सबका स्वर्गका पिता है। इस्लिये हमें भरोसा और आदरसे उसकी सेवा करना उचित है।

परमेश्वर सब मनुष्योंका सिरजनहार होनेसे उनका पिता कहलाया जाता, परन्तु इस्लिये नहीं है कि वुह

इस् वाक्यमें "हमारे पिता" कहलाया है। केवल वे जो प्रभु ईसा मसीह पर विश्वास लानेके द्वारा ईश्वरसे मिलाये हुये हैं उन्से इस्बातको "हे हमारे पिता" सच्चाईसे कह सक्ते हैं। परमेश्वर प्रतिदिन दुष्ट लोगोंसे क्रोधी है और उनपर प्रेमसे दृष्टि नहीं करता है और वे उस्की ओर प्रेम वा आसरासे नहीं देख सक्ते हैं इस् लिये यह प्रार्थना किसीके योग्य नहीं है जिस्का शारीरिक स्वभाव ईश्वरसे शत्रुता है और जो पाप कर्म्में रहते है। जिस रीतिसे व्यभिचारी अथवा झूठा अथवा देव पूजक इत्यादि ईश्वरसे कहें कि "हे हमारे पिता।" ईश्वर उनका पिता नहीं है और ईसा मसीहने ऐसे मनुष्योंसे कहा कि "तुम अपने पिता शयतानसे हो और अपने पिताकी वाञ्छाके समान तुम करोगे।" परन्तु जब कोई मनुष्य अपनेको पापी जानके मुक्तिदाता प्रभु ईसा मसीहपर विश्वास लावता है तब वुह उस्के द्वारा ईश्वरसे मिलाया हुआ है और ईश्वरके क्रोध उस्से दूर किया गया है। ईश्वर उस्से प्रेम कर्ता है और उस्को सुख देता है। इस् समयसे वुहो मनुष्य ईश्वर अपने पिताको समझे जो समस्त प्रकारके पापको क्षमा करता है और जितने मनुष्य इस् रीतिसे ईसा मसीहको ग्रहण करते हैं वह उन्हें ईश्वरके पुत्र होनेका मर्य्यादा देता

है उन्होंको जो उसके नाम पर बिश्वास लाते हैं और केवल वे लेपालककी आत्मा पाता है जिस्से अब्बा अर्थात् पिता कहके पुकारते हैं। ऐसेही मनुष्योंको जब परमेश्वर-के नाम सन्तोषका भरपूर है क्योंकि इससे वे समझें कि जो पृथिवीके माता पिता अपने पुत्रोंको अच्छा दान देने जानते हैं तो हमारे पिता जो स्वर्गमें है उन सभोंको जो उस्से मांगते हैं अधिक भली वस्तुओंको देगा अर्थात् कि वुह उनको स्वर्गीय वस्तुनमें अनेक प्रकारका आत्मिक वर देगा।

इस बातसे यहभी समझा जाता है कि परमेश्वरको आदर देना सब लोगोंको उचित है। जो हम सबको अपने माता पिताको आदर देना उचित है तो कितना अधिक आदर ईश्वरको देना उचित है? वुह हमारे स्वर्ग-का पिता है उसका सिंहासन स्वर्गमें है और उसमें वुह अपना विभवके प्रकाशित किरणोंको दिखाता है और वहां साधु लोग और पवित्र दूत सदा सर्वदा उसकी स्तुति करते उसे पुकारते हैं "कि महान् और आश्चर्य तेरे कार्य, हे प्रभु ईश्वर सर्वशक्तिमान् तेरे मार्ग सच और ठीक हैं, हे साधुओंके राजा हे प्रभु कौन तुझसे न डरेगा और तेरे नामकी महिमा न करेगा क्योंकि तू अकेला पवित्र है।" हे हमारे प्रिय बन्धु ईश्वर से प्रेम

कर और प्रभु ईसा मसीहके मार्गसे उसकी सेवा कर तो तू जानेगा कि जैसा पिता अपने पुत्रोंसे प्रेम करता है वैसाही परमेश्वर अपने लोगोंसे प्रेम करता है।

"तेरा नाम पवित्र होय।" इस निवेदनसे ईसा मसीह हमसबको बतलाता है कि हमसबकी पहिली और बडी चाहना यह होगी कि परमेश्वर सबसे महिमा पावे। जो कोई पदवी अथवा बात अथवा काम जिससे ईश्वरने अपनी ईश्वरताको प्रगट किया है सो उसका नाम कहा जाता है और यह उसका नाम अपने मङ्गल समाचारमें भले प्रकारसे प्रकाशित है। इसमें कुछ "सत्य ईश्वर और मुक्तिदाता" आपही को प्रगट करता है और उसको सत्य ईश्वर और केवल मुक्तिदाता मानलेना यही उसका नाम पवित्र करना है। इस निवेदनमें हमसब ईश्वरसे सहायताकोभी मांगते हैं कि हम समस्त प्रकारसे जिससे उसने अपनेहीको प्रगट किया है उसकी महिमा करें। हृदयमें बडा और पवित्र ध्यान से और बोलीमें उसके विषयमें ठीक बात कहनेसे और सब काम में क्या परलोकका अथवा संसारका हमसबको उसकी महिमा करना अवश्य है। क्योंकि हम क्या खावें अथवा पीवें अथवा जो कुछ करें सब कुछ ईश्वरका माहात्म्यके लिये करना अवश्य है। हे भाइयो

इस् बातका निरन्तर स्मरण करो कि जो कुछ हम करें अथवा कहें कि हम उसको ईश्वरकी माहात्म्यके लिये करें इस्लिये हम और सबलोग ऐसाही करें जिस्से जब हम ईश्वरकी प्रार्थना करते हैं तब कहें कि "तेरा राज्य आवे।" ईश्वरका राज्य जिस्के आनेके लिये हम सब प्रार्थना करें सो ईसा मसीहका आत्मिक राज्य है जिस्को लगानेके लिये वह जगत्में अवतार हुआ। यह राज्य लौकिक नहीं परन्तु आत्मिक है जिस्को ईसा मसीह अपने लोगन्के हृदयमें करता है और जब हम ईश्वरसे प्रार्थना करते हैं कि "तेरा राज्य आवे" हम चाहते हैं कि यह ईसा मसीहका आत्मिक राज्य हमारे और सब लोगन्के हृदय में आवे।

ईसा मसीह राज्य करता है कि वह शयतानका राज्य विनाश करे। शयतान वही दुष्ट आत्मा है जिसके वशमें सब पाप कर्नेहारे हैं वह ईश्वरकी आज्ञा भङ्ग कर्नेहारोंके हृदयमें राज्य करता है और अपनी इच्छा पर उन्हें बन्धुआ करता है इसलिये धर्मपुस्तकमें लिखा है कि "जो पाप करता है सो शयतानसे है।" और वे इस देशका रहनेहारे ऐसे महापापी हैं कि वे उसकी सेवा करते हैं, परन्तु मुक्तिदाता ईसा मसीह इस्लिये जगत्में अवतार लिया कि शयतानके इन्

कार्य्योंको विनाश करे और उसके वशमें से मनुष्योंको उद्धार करे। इस लिये उसने ईश्वरको मनुष्योंके कारण प्रायश्चित्तमें अपने प्राणको बलिदान किया और इस बलिदानसे बुराई के सब प्रभुता और पराक्रमको बिगाड़के उसने शैतान पर जय किया और उसको बन्धुआ किया। इसीसे जहां जहां वह अपने मङ्गल समाचारको भेजता है तहां तहां वह बन्धुओंको छोड़ानेको प्रगट करता है और जिन्होंको वह अपनी कृपाको दान देता है उन सबको वह शैतानके राज्यके अन्धकार और बुराईसे छुड़ाता है और अपने पवित्रता और सुखके राज्यमें लाता हैं।

जब विश्वासी लोग ईश्वरसे प्रार्थना करनेमें कहते हैं कि "तेरा राज्य आवें" वे चाहते हैं कि ईसा मसीहके आत्मिक राज्यके उजाला और सामर्थ्य और पवित्रता और सुख अपने हृदयमें अधिक प्रगट किये जायं और कि समस्त जगत्के रहनेहारे क्या हिन्दू लोग क्या मुसलमान लोग इत्यादि अपने बूरे व्यवहारोंको छोड़के मुक्तिदाता ईसा मसीहके राज्यमें आवें तब आगम कही ऊई बात पूरी होगी "कि इस जगत्के समस्त राज्य हमारे प्रभु और उसके मसीहका ऊआ और वह सदा सर्व्वदा राज्य करेगा।"

“तेरी इच्छा जैसी स्वर्गमें है वैसी पृथिवीमें होवे।”
योग्य है कि जगत्‌के तेजको सिर्जनेहार जो ईश्वर है
उसपर राज्य करेगा। उसकी इच्छा अपने सब प्राणि-
योंके कार्योंकी ठीक विधि है और मनुष्य और शयतान
और उसके दूतोंको छोड़के वे सभी उसको मानते हैं।
ईश्वरने अपनी इच्छाको धर्मपुस्तकमें प्रगट किई है
जिसमें दश बड़ी आज्ञाको उसने दिई है जिनसे हम
सब समझें कैसी सेवा उसकी हमसबको देना चाहिये।
इन दश आज्ञाके सारार्थ यह है कि “परमेश्वरको
जो हमारे ईश्वर है अपने सारे अन्तःकरणसे और
अपने सारे प्राणसे और अपने सारे मनसे और अपने
पड़ोसीको अपने समान हमसबको प्यार करना उचित है।”
परन्तु हमसब मुख्य दशा अर्थात् पवित्र और सुखकी
दशासे पतित होके ईश्वरकी आज्ञा पर चल नहीं
सकते और इसलिये कार्य्यकी विधिसे अनन्त जीवनके
अर्थात् स्वर्गमें बसनेके अधिकारी नहीं हो सकें। ईश्वर
हमारी निरुपाय दशा विचारके अपनी अपरम्पार दयासे
विश्वासकी विधि अर्थात् निस्तारके मङ्गल समाचारको
समस्त जगत्‌के रहनेहारोंके लिये ईसा मसीहके
द्वारासे प्रगट किया है और इसके विषयमें “उसकी
आज्ञा यह है कि हम उसके पुत्र ईसा मसीहके नाम

पर विश्वास लावें और जैसा उसने आज्ञा दिई है कि एक दूसरेको प्यार करें।" परन्तु मनुष्य स्वभावसे इस् आज्ञाको नहीं मानता है वह निस्तारके लिये कुछ चिन्ता नहीं करता अथवा मार्गको जिस्से उस्को पावे नहीं चाहता है और जब लग वह इस् दशामें रहता है तब लग वह किसी प्रकारसे कुछ काम ईश्वरकी इच्छाके अनुसार नहीं कर सक्ता इस् लिये कि "बिना विश्वाससे ईश्वरको प्रसन्न करना अन होना है" "मनुष्यके शारीरिक स्वभाव ईश्वरसे शत्रुता है।" शारीरिक स्वभावकी इच्छा ईश्वरकी इच्छाके विरोधमें है परन्तु शैतानकी इच्छाके समान है इस् लिये हम सभोंके केतनी आवश्यकता है कि ईश्वरसे प्रार्थना करें कि "तेरी इच्छा होवे।" जब हम ऐसी प्रार्थना करते हैं हम् चाहते हैं कि परमेश्वर अपनी इच्छाको जाननेकी वांछा हमें देवे; जैसे स्तुतिकारी दाऊद एक सौ तैंतालीसवीं भजनके दशवीं पङ्क्तिमें प्रार्थना करता है "हे यहोवाह अर्थात् परमेश्वर मुझे अपनी इच्छापर चलना सिखला क्योंकि तूही मेरा ईश्वर है।" अथवा सूलूस जब फिरा हुआ था "हे प्रभू तू क्या चाहता है कि मैं करूं।"

इसी प्रार्थनासे यह भी हम चाहते हैं कि परमेश्वर अपनी इच्छापर चलनेको हमें मन देवे। हमारे मन

स्वभावसे ईश्वरकी इच्छासे नहीं लगता है परन्तु ठीक ख्रीष्टियानकी इच्छा यह है कि उसमें ऐसा मन रहे जिससे वह ईश्वरको नित्य डरे और उसकी आज्ञाओंके ध्यान करे इसलिये वह ऐसाही मनको ईश्वरसे मांगता है।

फेर इस प्रार्थनासे हम चाहते हैं कि परमेश्वर हमें अपनी इच्छाके अनुसार अभ्यास कर्नेको सामर्थ्य देवे क्योंकि इच्छा हमसबमें होवी परन्तु भला कर्नेके सामर्थ्य हम सब नहीं पावें इसलिये हमसब जानके कि वह ईश्वर है जो अपने लोगनमें कार्य्य करता है क्या इच्छा क्या कार्य्य कर्ना इस कारण उससे प्रार्थना करते हैं कि "वह हमसभोंको हरएक भले कार्य्यमें सिद्ध करे कि हम उसकी इच्छा पर चलें और जो कुछ कि उसकी दृष्टिमें प्रसन्न है ईसा मसीहके द्वारासे हमों में करे।" हरएक दशामें क्या भाग्यवन्त क्या दुःखी अवश्य है कि हमसब ईश्वरकी इच्छामें अधीन होवें और कुड़कुड़ानेके बिना हमारे दुःख अथवा सुखके कृतज्ञतासे भोग करें क्योंकि "जो लोग ईश्वरको प्यार करते हैं उन्होंकी भलाईके लिये समस्त विषय मिलके कार्य्य करते है।"

सब स्वर्गवासी लोग ईश्वरकी इच्छाको सम्पूर्ण करता है। पवित्र दूत जो अपने पराक्रम के कारण प्रतिष्ठित हैं अपने सब कार्य्यको अधीनता और आनन्द-

ता और धुनने नित्य उसकी आज्ञाके अनुसार करते हैं और सिद्ध किये गये धर्मियोंकी आत्मा इस प्रकारसे भी ईश्वरकी सेवा करते हैं और उचित है कि हमसब उन्हींके समान ईश्वरकी इच्छा पर चलें इसलिये जब हमसब ईश्वरकी प्रार्थना करते हैं तब उससे हमें मांगना उचित हैं कि वह दया करें अपनी इच्छापर सदाओं चलनेको हम सबको सहायता देवे।

"हमारे प्रतिदिनको रोटी आज हमको दे।"

सब श्रोगनका पालन करता ईश्वर है; जीवनकी सामग्री और हम सबके आनन्दता और कुशल उसे आते हैं परन्तु सब मनुष्य पापी होनेसे इस जीवनकी भलाईको खो दिया। मनुष्यके पापके कारण ईश्वरसे पृथिवी शापित हुई है इस लिये वह अपने आहार को उसे परिश्रम करके लेता है परन्तु परमेश्वरकी भलाईके द्वारा है कि काम चलानेके प्रवीणता और बल उसका हैं और वही है जो हमें आकाशसे दृष्टि और फलके ऋतुनको देता है। जो कुछ हम सबके है क्या खाना क्या पीना क्या धन सो ईश्वरके दान हैं इसलिये उनके जो कुछ हम चाहें उचित है कि हम सब ईश्वरसे प्रार्थना करें परन्तु संसारकी वस्तुनके लिये उचित है कि हमारी सब वांछा मध्यम होवें।

इस निवेदन से ईसामसीहने अपने शिष्यनको नहीं सिखाया है कि वे धन अथवा बडा नाम चाहें इसलिये कि "वे जो अपने को धनवान् अवश्य किये चाहते हैं सो परीक्षा और फन्देमें औंधे मुंह गिरते हैं और बहुत सी मूर्खता और बुरी लालसा में पडते हैं जो मनुष्यन को सत्यानाश और विनाश में दे मारती हैं क्योंकि धनकी प्रीति समस्त बुराइयों की जड है कितने उसको लालच करनेसे विश्वासके मार्ग से भटक गये और नाना प्रकारके शोकसे छिद गये हैं।" परन्तु उचित है कि हम सब ईश्वर से भोजन और वस्त्र मांगें इस-लिये कि हमारे स्वर्गवासी पिता जानता है कि हमें इन वस्तुनका आवश्यक है और जो पहिले हम ईश्वरके राज्य का और उसके धर्मका खोज करें तो ये सब वस्तु हमें अधिक किई जायंगी और इनको पाके हम इन्हों-से सन्तोष करें।

सप्ताहकी रोटी अथवा महिनेकी रोटी अथवा वर्षकी रोटी चाहना उचित नहीं है क्योंकि हमें कलके विषयमें बडाई करना अथवा भविष्यत् वर्षों पर आसरा रखना अयोग्य है इसलिये कि "हम नहीं जानते कि कलको क्या होगा क्योंकि हमारा जीवन क्या है? वह एक वाष्प है जो थोडे समयलों दीखाई देती है और

और बिगड़ जाती है।" इस कारण हम सब आगे के लिये सब चिन्तित भावना छोड़के प्रति दिन भरोसा परमेश्वर पर रखें। "आजका दुःख आजही के लिये बस है" और आजकी भलाई भी आजही के लिये बस् है इसलिये प्रतिदिन जो कुछ हमें चाहिये उसकी हम ईश्वर से प्रार्थना करें और जिस्को वह हमें देता है उस्को कृतज्ञता और धन्यवादसे पावें। साधुलोग अपनी आत्माके लिये भी ईश्वरसे पदार्थ को चाहेंगे। जो शरीर के लिये भोजन है सो आत्माके सुखके लिये मुक्तिदाता ईसामसीह है। वह धर्म पुस्तक में "जीवन की रोटी" कहलाता है और जो कोई इस् रोटी को खाता है अर्थात् उस्के प्राप्त किये उके उद्धार का अधिकारी है वह सदा जीता रहेगा अर्थात् वह ईसामसीह के द्वारा ईश्वर से आनन्द सदा लों पावेगा इसलिये वह ईसामसीह के द्वारा से ईश्वर पर आशा रखके उस्के ऐश्वर्यकी आशामें प्रति-दिन आनन्द करता है।

"और हमारी ऋणोंको क्षमा कर जैसे हम भी अपने ऋणियों को क्षमा करते हैं।"

सब पाप ऋण है जिस्को हम ईश्वरके धारते हैं और सब मनुष्य पापी होने से ईश्वर के सब लोग ऋणी

हो गये हैं। कोई मनुष्य नहीं है एकभी नहीं जो ईश्वर
की आज्ञा का पालन किया है सभोंने नाना प्रकार से
पाप किया है और सबके सब क्या धनी क्या कङ्गाल
क्या पण्डित क्या मूर्ख ईश्वरके साम्हने दोषी ठहरे हैं इस-
लिये सब लोग को पाप की क्षमा का प्रयोजन है और
ईश्वर को छोड़के कोई पाप का क्षमा कर्त्ता नहीं है
परन्तु उसके पास क्षमा है हाँ दया भी और बहुत
उद्धार इस कारण ईसामसीहने हम सब को इस्
निवेदन से सिखाया है कि हम् अपने पापों को मान
लेके ईश्वर से क्षमा मांगे और जो हम् अपने पापों को
मान लेवे तो परमेश्वर हमारे पापोंको क्षमा करनेको
और समस्त अधर्मता से पवित्र करनेको सच्चा और
न्यायी है। परन्तु जो हम् त्राण करता ईसामसीह
पर विश्वास नं लावें तो पापको क्षमा हम नहीं पा
सके इसलिये कि "यह ईश्वरके अनुग्रह से है कि
हम् उस् मुक्तिके कारण जो ईसामसीह में है सेंत
यथार्थिक गिने जाते हैं जिसको ईश्वरने उसके लोहू के
विश्वास के द्वारा से प्रायश्चित्त ठहराया है कि अपने
यथार्थता को पिछले पापोंके मोचनके लिये ईश्वरके
सन्तोषके समान प्रगट करे कि इस् समयमें अपने यथा-
र्थता को दिखावे जिससे वह यथार्थिक रहे और उसको

जो ईसामसीह पर विश्वास लाता है यथार्थिक जाने" इस कारण जो हम अपने पापों को क्षमा चाहें तो चाहिये कि हम ईसामसीह पर विश्वास के द्वारा और पाप के कारण खेदित होने से ईश्वर से चाहें।

इस निवेदन से यह भी समझा जाय कि हम सबको आपस में दयालु होना चाहिये जैसा कि जो कोई हमारे ऋणी अपनी ऋणको नहीं भर देतो हमें दया कर्के उसको क्षमा करना चाहिये अथवा जो कोई हमें अपराध करे और अपने अपराध के पश्चात्ताप करे तो हमें उसको भी क्षमा कर्ना योग्य है जैसा कि प्रभु ईसामसीहने अपने शिष्यनको सिखाया है कि "जो तुम मनुष्योंके अपराध को क्षमा करो तो तुम्हारा स्वर्ग-वासी पिता भी तुमको क्षमा करेगा परन्तु जो तुम मनुष्योंके अपराध को क्षमा न करो तो तुम्हारा पिताभी तुम्हारे अपराध को क्षमा न करेगा।" उसने भी दया प्रगट कर्नेके लिये यह दृष्टान्त कहा कि "स्वर्गका राज्य किसी राजा के तुल्य है जो अपने सेवकों से लेखा चाहता था और जब वह लेखा लेने लगा एक को उसके पास लाये जो उसके दश सहस्र तोडे धार-ता था। परन्तु इस कारण कि मुझ देनेको कुछ न र-खता था उसके स्वामीने आज्ञा किई कि वह और

उसकी पत्नी और लड़के बाले और सब जो उसका था बेचा जाय और भर दिया जाय। तब उस सेवकने गिरके उसकी बिनती करके कहा हे प्रभु मुझपर सन्तोष कर और मैं तुझे सब भर देऊंगा। तब उस सेवक के स्वामी को दया आई और उसने उसको छोड़ दिया और उसको ऋण क्षमा किया। परन्तु वही सेवक बाहर गया और अपने एक संगी सेवक को पाया जो उसको सौ दमड़ी धारता था और उसने उसपर हाथ डाले और नरेटी पकड़के कहा जो तू धारता है सो मुझे दे। तब उसका संगी सेवक उसके पांव पर गिरा और उसकी बिनती करके बोला कि मुझ पर सन्तोष कर और मैं तुझे सब भर देऊंगा। पर उसने न माना परन्तु जाके उसको बन्दी गृह में डाल दिया जबलों वह ऋण भर देवे। सो जो कुछ कि हुआ था जब उसके संगी सेवकोंने देखा वे अति दुःखी हुये और जो कुछ बीत गया था आके अपने स्वामी को सुनाया। तब उसके स्वामीने उसको बुलाके कहा कि हे दुष्ट सेवक मैंने तुझे इस कारण सब ऋण क्षमा किया कि तूने मेरी बिनती किई जैसी दया मैंने तुझ पर किई वैसी दया क्या अपने संगी सेवक पर तुझे करना उचित न था। तब उसके स्वामीने रिसियाके उसको पीड़ा

देनेहारोंको सोंपा जबलों समस्त ऋणको जो वह उसका धारता था भर देवे। सो इसी रीतिसे मेरा स्वर्गवासी पिता भी तुमसे करेगा यदि तुम अपने मनसे अपने भाइयोंके अपराध क्षमा न करो।" इसलिये हम आपस में अपराधको मान लेके दया प्रगट करें और ईसा मसीहके द्वारा ईश्वरकी दया पर आशा रखके हम अपने पापोंकी क्षमा प्रार्थना करें।

"और हमें परीक्षा में न डाल परन्तु बुराई से बचा।"

वे सब जिनके पाप क्षमा किया गया है फेर पाप कर्मको बहुत से डरेंगे और परीक्षा केवल को जानके ईश्वरसे प्रार्थना करें कि वह उसमें उन्हें पडने न देवें अथवा उसके संग निकलनेके पथ ठहरावे कि वे सह सकें। "परन्तु जब हम किसी परीक्षा में पडे तो न कहे कि मैं ईश्वर से परखा जाता हूं क्योंकि ईश्वर बुराइयों से परखाया नहीं जा सक्ता और न वह किसी को परखाता है परन्तु हरकोई अपनी ही लालसा से खींचा जाके और फुसलाया जाके परीक्षामें पडता है।" सब लोगनके हृदय में बहुत सी बुरी लालसा हैं और उनके खींचने से वे नाना प्रकार की परीक्षामें पडते हैं। वही दुष्ट आत्मा शयतान भी सब लोगनको पाप कर्मको

फुसलाता है इसलिये हम सबको उसके छलसे सौचेत रहना चाहिये और ईश्वरसे सहायता की प्रार्थना करना कि हम सब उसके सन्मुख ठहर सके। बुरे लोग के सङ्ग चलना भी योग्य नहीं है ऐसा न हो कि हम उनके बुरे व्यवहारों को सीखें और पाप कर्नेको उनके सङ्ग चलें।

और ईश्वरसे इस बातकी प्रार्थना करें कि वह "हमें बुराईसे बचावे।" इस निवेदन से ईसामसीह हम सबको सिखाता है कि समस्त भांतीकी बुराईसे यथा शैतान के बैर वा छल वा अपने हृदयकी दुष्टाई वा संसार के फान्दे वा दुःख वा विपत्ति इन सब से इत्यादि ईश्वर से मुक्ति की प्रार्थना कर्ना उचित है इस-लिये हम सब अभाग के दिन में ईश्वर की दुहाई करें वा जाने कि वह कृपा कर्के हमें छुटकारा देवे।

इस प्रार्थना के अन्त यह है "क्योंकि राज्य और पराक्रम और माहात्म्य तेरे हैं; आमीन।" ये बाते बतलाते है क्यों कर हम सब ईश्वर से प्रार्थना करें और आशा रखें कि वह हमारे सब निवेदन को सुने और पूरा करे। त्रिलोक के राज्य ईश्वरका है इस-लिये जो कुछ उसमें है सो उसके वश में है और वह अपनी इच्छाके अनुसार उसको बांट्ता है। पराक्रम

भी उसीका है इसलिये जो वह चाहे तो हमारी इच्छा को पूरी कर सक्ता और कृपावन्त होनेसे हम सब आशा रखें कि वह पूरा करेगा इस कारण माहात्म्य उसका भी होगा। जो सब ईश्वर करता है सो सब अपनी माहात्म्य के दिखानेके लिये करता है इस कारण जो कुछ उससे हम पाते हैं उसके सब माहात्म्य उसे देना चाहिये। यह राज्य और पराक्रम और माहात्म्य ईश्वर के सदाकी हैं वह कभी हमें सहायता देनेका पराक्रमसे रहित नहीं होगा और जो हम लाभ पावें तो उसको स्तुति सदा लों करेंगे। इन सब बातोंके पीछे हम कहते हैं "आमीन" अर्थात् ऐसा होय वह सब पूरा होय और ठहर जाय कि परमेश्वर की माहात्म्य दिखाया जाय और इससे कुछ अधिक हम नहीं चाहते हैं। इसमें हमारी सब वांछा होय जो परमेश्वर कृपा करें हमको भला करेगा।

हे भाइयो प्रार्थना करनेकी कैसी भली रीति यह है। उसको भले प्रकारसे विचारो और जो कुछ तुम चाहो सो मन देके ईसामसीह के द्वारा इस रीतिसे ईश्वरसे प्रार्थना करो।

प्रार्थना करनेका उदाहरण।

हे हमारे महा कृपावन्त पिता जो स्वर्ग में है जो कुछ पृथिवी पर हैं उसको तू सम्पूर्ण रीतिसे जानता है तेरा नाम सब लोगोंमें पवित्र होय और कृपा करके मुझे सहायता दे कि मैं तुझे सर्व्व शक्तिमान् और पवित्र ईश्वरको प्यार करूं। तेरा राज्य आवे और तेरा मङ्गल समाचार का सुनानेके द्वारा सर्व्वत्र संसार में स्थापन किया जाय सब देशके रहनेहारे अपनेको तेरे और तेरा पुत्र ईसामसीह के वशमें रखें। तेरी पवित्रात्मा सब लोगनके हृदय में राज्य करे और तेरी इच्छा जैसी स्वर्गमें पवित्र दूतोंसे वैसी पृथिवीमें समस्त मनुष्योंसे किई जाई। हमारे प्रतिदिन की रोटी आज हमको दे और जो कुछ मेरी कुशल और बल के सम्भालने को आवश्यक है सो प्रति दिन मुझे दे कि मैं तेरी सेवा कर सकूं। हे कृपावान् ईश्वर तेरा प्रिय पुत्रकी मृत्यु और विनती के कारण से मेरे पापोंको क्षमा कर और मुझे सहायता दे कि मैं हृदय से हरएक को जो मेरा बार-मिक है क्षमा कर सकूं। मुझे परीक्षामें न डाल और मुझसे पाप करनेके मार्ग में न जाने दे परन्तु शैतान् और उसके सब छलसे बचा न हो कि मेरा प्राण पापसे अपवित्र और नष्ट होवे क्योंकि त्रिलोकके राज्य तेरा

ही है और जो तू चाहे तो मेरी सब इच्छाके निवाह कर सकता है इसलिये कि सब वस्तु तेरे वश में हैं इसीसे समस्त प्रकार की प्रतिष्ठा और महिमा सदा सर्व्वदा तेरे होय। आमीन।

दूसरा उदाहरण।

हे सर्व्वशक्तिमान् और सर्व्वज्ञानी परमेश्वर तू जानता है कि मैं पापी हूं क्योंकि मैंने स्वर्गके और तेरे आगे बहुत प्रकारसे अपराध किया है परन्तु तेरी अपरम्पार दयाके समाचार को सुनके जिसको तूने तेरा पुत्र ईसा-मसीह के द्वारा जगत् पर प्रगट किया है इसलिये मैं तेरी बिनती करता हूं कि तू मुझ पर कृपा करके मेरे सब पापों को क्षमा कर। मेरा अन्तःकरण स्वभाव से अति दुष्ट है और समस्त प्रकारसे क्या विचार क्या बात क्या कार्य्यसे मैंने तेरी भली और पवित्र आज्ञाका उल्लंघन किया है और इस् प्रकारसे सब लोगोंने भी पाप किया है और इस् कारण से हम् सब तेरे अनन्त क्रोध-का भोग करनेके योग्य हैं। परन्तु मैं तेरा नामकी स्तुति करता हूं कि "तूने जगत् को ऐसा प्रेम किया है कि तूने अपने एक लौता पुत्र दान दिया है कि जो कोई उस् पर विश्वास लावे नाश न होवे परन्तु अनन्त जीवन

पावे और कि पापोंसे उद्धार उसके कारण से सब मनु-
ष्योंके लिये उपदेश किया जाता है।" हे हमारे कृपावान्
ईश्वर मेरे अन्तःकरण में तेरी पवित्रात्मा को भेज दे कि
उसकी सहायता से मैं अपने सब पापका पश्चाताप करूं
और उन सबको त्याग करूं और तेरा प्रिय पुत्र ईसा-
मसीह पर सत्य विश्वास लाऊं और तुझे प्यार और
तेरी सेवा सर्व्वदा करूं। हे परमेश्वर मेरे किये हुए
पापकी क्षमा कर जिसको मैंने तेरे अज्ञानी होके गूंगी
मूर्त्तिन की सेवा कर्नेसे किया और मुझे सहायता दे
कि मैं हरएक झूठा और बुरा मार्गसे दूर भागूं। कृपा
कर्के मुझे तेरे वचनसे प्रति दिन सिखा कि मैं तेरी इच्छा-
को जानूं और उसके अनुसार से चलूं। तेरे वचन मेरा
अन्तःकरणका हर्ष और आनन्द होय मुझ में समस्त ज्ञान
में अधिकाई से बसे जिसतें मैं सम्पूर्ण होय और हरएक
उत्तम कार्य्यमें सिद्ध रहूं। मैं तेरी विनति करता हूं कि
तू मुझे बुराई और शयतानके छलसे बचावे और मुझे
सहायता दे कि जो कुछ मैं करूं सो तेरे माहात्म्यके
लिये करूं।

हे परमेश्वर तेरी कृपा मेरे भाई बन्धु लोगों और
पड़ोसियोंको भी प्रगट कर। मूर्त्ति पूजा कर्नेकी अयोग्य-
ता और बुराई उनको समझा और तेरी पवित्रात्मा को

सहायता दे कि वे सब अपने पापका पश्चात्ताप करें और जगतके मुक्तिदाता तेरे प्रिय पुत्र ईसामसीह पर विश्वास लावें और तुझे प्यार और तेरी सेवा करें। तेरे अनुग्रह का मङ्गलसमाचार संसारके सब देशोंको भेजवा दे कि सब लोग जो पृथिवी में हैं अकेले सच्चे ईश्वर तुझे जानें और ईसामसीह को जिसे तूने भेजा है मानें और परलोकमें तेरे समीप रहनेके योग्य होवें। इनकी सब और दासके समेत जो मुझे अवश्य है मैं तुझसे हे परमेश्वर प्रभु ईसामसीह के कारण से प्रार्थना करता हूं जिसको और तुझको और पवित्रात्मा को समस्त प्रकार की प्रतिष्ठा और माहात्म्य सदालों होवे। आमीन।

I